फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

कहत कबीर

सड़कें
आतंकवाद का एक चेहरा हैं।
बूचड़खाने हैं सड़कें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद–121001

नई सीरीज नम्बर 214 अप्रैल 2006

समझाना बनाम समुदाय–रूपी तालमेल (3)

✱ हम मानवों ने विश्व- व्यापी जटिल ताने- बाने बुन लिये हैं। जाने- अनजाने में हमारे द्वारा निर्मित हावी ताने- बाने हम मानवों के ही नियन्त्रण स बाहर हो गये हैं। हावी ताने- बाने वर्तमान समाज व्यवस्था का गठन करते हैं। ✱ जटिल और विश्व- व्यापी होने के बावजूद यह ताने- बाने स्थिर नहीं हैं, जड़ अथवा ठहरे हुये नहीं हैं बल्कि गतिमान हैं। हर पल, हर क्षण चीजें बदल रही हैं। ✱ हावी तानों- बानों का योग, वर्तमान समाज व्यवस्था हम मानवों पर तो हिमालयी आकार का बोझ बन ही गई है, पृथ्वी की प्रकृति को भी यह व्यवस्था तहस- नहस करने में लगी है। ✱ ज्ञानी- ध्यानी- बलशाली- बलिदानी- अवतारी मनुष्यों के प्रयास जाने- अनजाने में हालात को बद से बदतर बनाते, असहनीय वर्तमान तक ले आये हैं। धार्मिक- आर्थिक- सांस्कृतिक- राजनीतिक पंथ- सम्प्रदाय वर्तमान समाज व्यवस्था से पार पाने में अक्षम लगते हैं। ✱ गतिशील व विश्व- व्यापी दमन- शोषण वाली इस व्यवस्था से पार पाने और नई समाज रचना की क्षमता संसार में निवास कर रहे पाँच - छह अरब लोगों में लगती है। इस क्षमता को योग्यता में बदलने के लिये सामान्यजन की सहज गतिविधियों के महत्व को पहचानना- स्थापित करना प्रस्थान- बिन्दू लगता है। ✱ ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं की हावी भाषा की जगह नई भाषा की आवश्यकता है जिसके लिये विगत के समुदाय कुछ सामग्री प्रदान कर सकते हैं।

● समझाने वाले कटघरे का निर्माण करते हैं। बातों- तर्कों- दलीलों- आचरणों का अदृश्य कटघरा ऐसी परिस्थिति का निर्माण करता है कि आमतौर पर सोचने- निर्णय लेने- स्थिति परिवर्तन के लिये समय सिकोड़ दिया जाता है। अक्सर तत्काल/ अभी करना/फलाँ तारीख तक वाली बात रहती है, "हाँ" अथवा "नहीं" के बहुत- ही सीमित विकल्प रखे जाते हैं।

● कटघरे में इसलिये खड़े करते/खड़े हो जाते हैं क्योंकि समझाने वालों और समझने वालों, दोनों की हावी इच्छायें सामान्य तौर पर एक ही होती हैं। हावी सोच- विचार- इच्छाओं का निर्माण- रचना विद्यमान समाज व्यवस्था द्वारा होता है।

● मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन करना विद्यमान समाज व्यवस्था है। मण्डी और मुद्रा के दबदबे वाली वर्तमान समाज व्यवस्था हावी इच्छाओं की सृष्टि व पोषण करती है। विगत की ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं की ही तरह वर्तमान की ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था भी अपने द्वारा रची व पाली जाती इच्छाओं में से कुछ को अच्छी- सकारात्मक और कुछ को बुरी- नकारात्मक घोषित करती है। यह भी सही है कि पूर्व की ऊँच- नीच वाली व्यवस्थाओं की तरह ही वर्तमान की ऊँच- नीच वाली व्यवस्था में भी उन इच्छाओं की भरमार है जिन्हें यह व्यवस्था ही नकारात्मक इच्छायें घोषित करती है।

-- झूठ, फरेब, तिकड़मबाजी, हेराफेरी, चोरी- डकैती, घोटालों का आज संसार में सर्वत्र बोलबाला है।

-- असन्तोष, अशान्ति, हिंसा, मारकाट ने पूरी दुनियाँ को अपनी गिरफ्त में ले लिया है।

-- असमानता, भेदभाव- दुभान्त, अनादर, अपमान ने पृथ्वीवासियों को लपेट में ले लिया है।

-- भ्रष्टाचार- बेईमानी से, अवैधानिक तरीकों से, गैरकानूनी ढँग से पैसा कमाने, सफल होने उर्फ ऊँच- नीच की सीढी चढने के प्रयासों का जगत में बोलबाला हो गया है।

-- फालतू बैठना, खाली घूमना, बेरोजगारी. .... करोड़ों सड़कों पर हैं और लाखों जेलों में।

● उपरोक्त के दृष्टिगत विद्यमान व्यवस्था द्वारा नकारात्मक घोषित इच्छाओं के पहाड़ों को वर्तमान व्यवस्था की प्रमुख समस्या कहा जा सकता है। लेकिन वास्तव में आज असल समस्या वर्तमान समाज व्यवस्था द्वारा घोषित सकारात्मक इच्छाओं में है। यह ठीक उसी तरह है जैसे कि कानून से परे शोषण अतिरिक्त परेशानियाँ लिये है परन्तु वास्तव में समस्या कानून अनुसार शोषण में है।

-- अपना मकान, अच्छा मकान बनाना। अपना परिवार, अपने बच्चे, अपने बच्चों को स्थापित करना, अपने बच्चों की ब्याह- शादी करना। उन्नति- ऊपर उठना, प्रतिष्ठा प्राप्त करना, सर्वोत्तम बनने के प्रयास करना। अच्छा खाना- पहनना- मनोरंजन के साधन प्राप्त करना। पैसों के लिये कुछ न कुछ करते रहना. ... बुढापे में समाज सेवा। प्रतियोगी बनना- बने रहना, प्रतियोगिताओं- कम्पीटीशनों में अव्वल रहने की कोशिशें करना। और, शान्ति- सत्य- नैतिकता....

❑ जिनकी न जमीन है और न आसमान, उन बढती सँख्या वाले डिब्बों- फ्लैटों की दोहरी (सकारात्मक- नकारात्मक) इच्छा की चर्चा की बजाय वर्तमान व्यवस्था में "अपने घर" की हावी सकारात्मक इच्छा ने मानव निवास की, हमारे निवास की जो गत बनाई है उन सीमेन्ट- लोहे के जँगलों अथवा झुग्गी बस्तियों को आइये देखने की कोशिश करें। निवास का प्रश्न, समुचित निवास की बात भी लगता है कि समुदायों, नये समुदायों के गठन के सन्दर्भ में ही देखी जा सकती है।

❑ परिवार का सिकुड़ना- टूटना, बचपन का सिमटना- दुर्गत, वृद्धों का अवांछनीय व्यक्ति बनना, परस्पर रिश्तों का अधिकाधिक कठिन होते जाना.... "अपने परिवार" का चक्कर पीढियों के बीच सम्बन्धों को लील (गया) रहा है। नये समुदायों के गठन में ही मानव योनि का जीवन्त जीवन, पीढी में- पीढियों के बीच गहरे सम्बन्ध सम्भव लगते हैं।

❑ उन्नति- प्रतिष्ठा- अव्वल के फेर हर आयु में अकेलापन की सृष्टि कर पीड़ा के सागर उत्पन्न कर रहे हैं।

❑ पैसे और पैसों के लिये काम करना स्वयं अपने ही मन, मस्तिष्क और तन को पराया बना कर इन्हें अधिकाधिक तानने, लहुलुहान करने में लगे हैं।

❑ बासी- फटाफट भोजन, दिखावट के लिये पहनावा, "खुशी" खरीदने.... की महामारी थके- हारे, ऊर्जाहीन तन और मन के लक्षण मात्र हैं।

❑ होड़- प्रतियोगिता- कम्पीटीशन.... मण्डी- मुद्रा का यह मन्त्र प्रत्येक के लिये प्रत्येक के संग क्षणिक, सतही, छिछले सम्बन्धों की सौगात लिये है।

❑ दमन-शोषण के दबदबे में, अत्याचार के बोलबाले में शान्ति का क्या अर्थ है ?

❑ फायदा-लाभ, "शुभ लाभ" जहाँ धर्म और कर्म हैं वहाँ सत्य का क्या अर्थ है?

❑ होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन जिस समाज व्यवस्था की धुरी है वहाँ नैतिकता का क्या अर्थ है?

हावी इच्छायें सहज- सामान्य इच्छाओं का दमन करती हैं। यह सही है कि सब सहज- सामान्य इच्छायें स्वयं में सकारात्मक नहीं होती परन्तु ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं की हावी इच्छाओं से वे गुण में भिन्न हैं – यह चर्चा फिर करेंगे। (जारी)

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

जनवरी 06 से हरियाणा में सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर- हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर 2448 रुपये है।

परफैक्ट आयरन मजदूर : "प्लॉट 15 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में 100 वरकर हैं और 8-9 ठेकेदार। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्पर की तनखा 1800 रुपये और कम्पनी द्वारा स्वयं रखे की 2000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 2-4 मजदूरों के ही हैं – फैक्ट्री में ए सी ई क्रेन का सामान बनाता है। एक शिफ्ट है 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कन्सोलिडेटेड कॉयन वरकर : " 13/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर काम करते हैं और ड्युटी ही 10 घण्टे की है – सुबह 8½ से साँय 6½ तक, ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं। हैल्पर को 10 घण्टे रोज काम के बदले महीने में 2000 रुपये देते हैं।"

एस.पी.एल. इन्डस्ट्रीज मजदूर : " प्लॉट 21 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में 150 कैजुअल वरकर काम करते हैं – भर्ती के लिये कम्पनी अधिकारी 500 रुपये रिश्वत लेते हैं। रोज 12 घण्टे काम तो करना ही करना – तबीयत खराब होने पर भी 12 घण्टे पूरे होने से पहले छुट्टी नहीं देते। एक सुपरवाइजर बहुत गाली देता है।"

फ्लोस्टार वरकर : " नोरदर्न कम्पलैक्स, 20/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8 बजे तक 12 घण्टे की शिफ्ट है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से। भर्ती पर हैल्पर की तनखा 1500 रुपये।"

सिकन्द लिमिटेड मजदूर : "प्लॉट 61 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा 28 फरवरी को दी – ठेकेदार के जरिये रखों को तो और भी बाद में दी। फरवरी का वेतन आज 10 मार्च तक नहीं दिया है।"

डी.एस. बुद्धिस्ट वरकर : "प्लॉट 88 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1600 और ऑपरेटर की 2200 रुपये। दो शिफ्ट हैं – सुबह 8 से साँय 6½ तक और शाम 6½ से अगले रोज सुबह 5 बजे तक। तनखा देरी से और फोरमैन गाली देते हैं, धक्के मारते हैं। हम 250 मजदूर मारुति कार का सामान बनाते हैं – ई. एस.आई. व पी.एफ. 100 के ही हैं।"

एस के डाइकास्टिंग मजदूर : " प्लॉट 30 सैक्टर- 4 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम वरकरों की तनखा 16- 1900 रुपये, ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, साप्ताहिक छुट्टी नहीं। हमारी सुबह 9 से रात 8½ बजे की शिफ्ट है – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हमें तनखा 15 तारीख को देते हैं।"

मोहता ब्राइट स्टील वरकर : "प्लॉट 258 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर को तनखा 1800 रुपये बताते हैं पर इन में से 4 छुट्टी के पैसे काट लेते हैं। ऑपरेटर की तनखा 2000 रुपये। फैक्ट्री में काम करते 18 मजदूरों में से 8 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.। मैनेजिंग डायरेक्टर बहुत गाली देता है।"

उषा (इण्डिया) मजदूर : " 12/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर, जनवरी और फरवरी की तनखायें 23 मार्च तक नहीं दी हैं।"

हिन्दुस्तान वरकर : "प्लॉट 3 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में भर्ती के समय हैल्पर को तनखा बताते 1500 हैं पर देते 1400 रुपये हैं।"

सुपर फाइबर मजदूर : "प्लॉट 57 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित जूट मिल में 2 फरवरी को सरकारी अधिकारियों का छापा – कम्पनी कागजों में 8 घण्टे प्रतिदिन की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी दिखाती है परन्तु वास्तव में रोज 10 घण्टे की ड्युटी है और साप्ताहिक छुट्टी के पैसे नहीं दिये जाते। साहबों के दौरे- छापे के बाद वास्तविकता जस की तस है।"

विजय इंजिनियरिंग वरकर : "प्लॉट 165 व 166 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड व पी.एफ. की पर्ची 4- 5 को ही। फैक्ट्री में रोज 12½ घण्टे की ड्युटी – सुबह 8 से रात रात 8½ बजे तक। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से। हैल्पर को 8 घण्टे के 80 रुपये और ऑपरेटर को 90 रुपये। फरवरी की तनखा 14 मार्च को दी। ढलाई में, मशीन शॉप में चोट लगने पर सौ- पचास रुपये दे देते हैं। फैक्ट्री में 15- 20 वर्ष से काम कर रहे कैजुअल हैं, डेली वेज हैं। फोरमैन- सुपरवाइजर गाली देते हैं।"

कल्पना फोरजिंग मजदूर : "प्लॉट 34- 35- 36 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में 12½- 12½ घण्टे की दो शिफ्ट हैं और रविवार को 8 घण्टे काम करना पड़ता है। जबरन 24- 36 घण्टे भी रोक लेते हैं और तब रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में 500 वरकर काम करते हैं पर ई.एस. आई. व पी.एफ. 5- 7 के ही हैं। कई ठेकेदार हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 1400- 1600 रुपये। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे हैल्पर की तनखा 1800 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लगातार खड़े रह कर काम करना पड़ता है – फैक्ट्री में 5 कैमरे लगा रखे हैं और छोटी- सी बात पर पैसे काट लेते हैं।"

ब्रॉन लैबोरेट्री वरकर : "प्लॉट 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे वरकर की तनखा 1500 रुपये – ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सुरभि मजदूर : "प्लॉट 318 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1600 और ऑपरेटर की 2300 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

सुपर स्विच वरकर : "प्लॉट 5 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में जनवरी और फरवरी की तनखायें आज 24 मार्च तक नहीं दी हैं। फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1200- 1500 रुपये और ऑपरेटर की 1800 रुपये।"

एस्कोर्ट्स...

(पेज चार का शेष)

" एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक की पेन्ट शॉप में इस समय 130 कैजुअल वरकर हैं और ई.एस.आई. कार्ड 5- 7 के ही हैं परन्तु दवाई उन्हें भी नहीं – ई.एस.आई. लोकल ऑफिस कहती है कि कम्पनी से लिखवा कर लाओ कि अब भी काम कर रहे हो और कम्पनी लिख कर नहीं देती, कहती है कि 72 नम्बर फार्म भर कर दे दिया, अब और कुछ नहीं देंगे। बाकी वरकर कई चक्कर के बाद ई.एस आई. लोकल ऑफिस से 72 नम्बर फार्म लाते हैं – पैसे खाने वाली बात रहती है। फैक्ट्री में टाइम ऑफिस जाते हैं फार्म ले कर तो कम्पनी हस्ताक्षर कर देती है पर टेम्परेरी वाली स्लिप नहीं देती और ई.एस.आई. लोकल ऑफिस कहती है कि स्लिप दोगे तब कार्ड बनेगा.... पेन्ट शॉप के 125 कैजुअल वरकरों के पास ई.एस.आई. का न कच्चा, न पक्का कार्ड है।

" फार्मट्रैक पेन्ट शॉप में 60 स्थाई मजदूर हैं पर सी- शिफ्ट में सिर्फ कैजुअल वरकर रहते हैं। सी- शिफ्ट में कम्पनी भोजन अवकाश नहीं देती – 6 घण्टे कनवेयर लाइन लगातार चलती है। सी- शिफ्ट रात एक से सबुह 7½ बजे तक रहती है और इस दौरान फैक्ट्री की डिस्पैन्सरी में डॉक्टर भी नहीं मिलता। शिफ्ट सप्ताह में नहीं बल्कि 15 दिन में बदलती है।

" फार्मट्रैक कैन्टीन में भोजन के समय बहुत भीड़ होती है। कैजुअल वरकरों को ज्यादा परेशानी होती है – कभी सब्जी खत्म, कभी रायता समाप्त, रोटी खत्म तो चावल ही खाओ। कईयों को आधा घण्टा तो भोजन लेने में ही लग जाता है और काम पर पहुँचने में देर होने पर हाजरी काटने की बात होती है। कुछ कैजुअल तो बिना खाये रह जाते हैं। और लगता है कि कच्ची रोटी भी कैजुअलों के हिस्से आती हैं – एस्कोर्ट्स यूनियन लीडरों को, मैनेजमेन्ट को यह दिखाते हैं तो वे कहते हैं कि इतने लोगों में तो खाना ऐसा ही बनेगा।

"हर 6 महीने बाद एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट 7- 8 दिन ब्रेक कर कैजुअल वरकर को दूसरे नाम से भर्ती करती है। इससे प्रोविडेन्ट फण्ड निकालना हमारे लिये भारी समस्या बनती है। जनवरी 04 के बाद से पी.एफ. कार्यालय भी कैजुअल वरकरों को बुरी तरह काटने में लगा है। मजदूर की तनखाओं में से 1850 रुपये कटे और 1850 कम्पनी ने जमा करवाये तो वरकर के भविष्य निधि खाते में 3700 रुपये दिखाते हैं पर मजदूर को देते 2600 रुपये ही हैं...."

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

वीनस कारपोरेशन मजदूर : "कम्पनी की सैक्टर-24 में प्लॉट 179, 197 व 262 में तथा सैक्टर-25 में प्लॉट 91 में फैक्ट्रियाँ हैं। कम्पनी ने स्वयं सिर्फ टूल रूम के वरकर भर्ती किये हैं और बाकी 4-5 हजार मजदूर एक ठेकेदार (एच आई एण्ड एस एस- श्री जी मैनपावर) के जरिये रखे है। वीनस फैक्ट्रियों में रोज 12 घण्टे की ड्युटी है – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, एक-दो हाजरी खा भी जाते हैं। कम्पनी में 150 के करीब पावर प्रेस हैं – हाथ कटते रहते हैं, वर्ष में 10-20 हाथ कट जाते हैं, हाथ कटने पर नौकरी से निकाल देते हैं। सैक्टर-25 फैक्ट्री में कार्य के दौरान एक ऑपरेटर के चोट लगी और 12 घण्टे ड्युटी बाद फैक्ट्री से गया तब कमरे पर मृत्यु हो गई। कम्पनी ने मृत मजदूर के परिवार के लिये कुछ नहीं किया – सैक्टर-25 प्लान्ट के वरकर 100-100 रुपये एकत्र कर रहे हैं।"

जेनुइन इलेक्ट्रिकल्स वरकर : "प्लॉट 30/5 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कहने को सुबह 9 से साँय 5½ तक ड्युटी है पर रोज रात 8½ तक तो काम करना ही पड़ता है और जबरन रात 12-1 बजे तक रोक लेते हैं – कम्पनी की रुड़की स्थित फैक्ट्री के लिये गाड़ी लोड होती है और पूरी गाड़ी माल के चक्कर में हम मजदूरों की अत्याधिक दुर्गत करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में काम करते 50 मजदूरों में से सिर्फ 3 कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं और 10 को ठेकेदार (कॉप्स सेक्युरिटी) के जरिये रखा है – बाकी 75 प्रतिशत मजदूरों को रिकार्ड में दिखाते ही नहीं और तनखा 1300-1500 रुपये देते हैं। ठेकेदार के जरिये रखों की पे-स्लिप में 2345 रुपये लिखा होता है पर देते 1700 रुपये हैं।"

फरीदाबाद बोल्ट टाइट मजदूर : "प्लॉट 43 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से भी कम – 8 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से। फैक्ट्री में 15 अगस्त, 26 जनवरी को भी रात को उत्पादन कार्य होता है – कम्पनी साप्ताहिक छुट्टी नहीं देती। बरसों से मजदूर लगातार काम कर रहे हैं, कम्पनी ब्रेक नहीं करती पर वरकर से कहीं हस्ताक्षर भी नहीं करवाती – तनखा कार्बन स्लिप पर, रजिस्टर पर नहीं। फैक्ट्री में करीब 200 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी. एफ. 8-10 के ही। रबड़ मोल्डिंग का गन्दा काम है, 12 घण्टे की ड्युटी और उत्पादन में एक भी डाई कम पर गालियाँ – हम मजदूरों में पीलिया, टी.बी. की भरमार है। मैनेजिंग डायरेक्टर रात को एक बजे छापा मारता है – डॉ. अशोक भाटिया की जबान पर ही माँ-बहन की भद्दी-भद्दी गाली होती है।"

एक्सेल स्टैप्स वरकर : "प्लॉट 5 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में किसी मजदूर की 3 तो किसी की 4 महीनों की तनखायें बकाया हैं। इसे पूर्व मुख्य मन्त्री बनारसी दास गुप्ता की फैक्ट्री कहते हैं और जब से हरियाणा में नई सरकार बनी है तब से तो सरकारी अधिकारी हम मजदूरों की शिकायतें सुनते ही नहीं। फैक्ट्री में सजावट का सामान बनता है और हैल्परों की तनखा 900-1200 रुपये। ई.एस.आई. नही, पी.एफ. नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कास्टमास्टर मजदूर: "प्लॉट 64 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में गालियों की भरमार है – एग्जेक्युटिव डायरेक्टर राहुल जैन, ऑपरेशनल डायरेक्टर गौतम जैन, वाइस प्रेसीडेन्ट ..... गालियों का शुभारम्भ करते हैं। मात्र 11 मजदूर स्थाई हैं और 25 ठेकेदारों के जरिये 1200 के करीब वरकर रखे हैं। हैल्परों को 1300-1500-1800 रुपये तनखा और अनुपस्थित दिखा कर महीने में 2-3-4 दिन के पैसे खा जाते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम दिखाते नहीं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं और इसे खर्चा दिखाते हैं तथा प्रतिमाह ओवर टाइम के 20 से ज्यादा घण्टे खा जाते हैं। फैक्ट्री के अन्दर धुँआ बहुत ज्यादा रहता है।"

एस.पी.एल. इन्डस्ट्रीज वरकर : "15/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में एक शिफ्ट है – सुबह 9½ बजे शुरू होती है पर छूटने का कोई समय नहीं है। सुपरवाइजर गेट पर फोन कर देते हैं अथवा बोल जाते हैं कि फलाँ विभाग के कम्पनी वालों को बाहर नहीं जाने देना है। कई ठेकेदार हैं और ठेकेदार गेट पर लिख कर दे जाते हैं कि फलाँ विभाग के उन के जरिये भर्ती को बाहर नहीं जाने देना है। साँय 6½ बजे वरकर छूटने शुरू हो जाते हैं और पूरी रात यह सिलसिला बना रहता है। रात 8 बजे और फिर रात एक बजे काफी मजदूर छूटते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखी 200 लड़कियों में से ज्यादातर रात 8 बजे छूटती हैं और उस समय फैक्ट्री गेट पर बीसियों ऑटो लगे रहते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती मजदूरों से जब-तब पूरी रात काम करवाते हैं पर सामान्य तौर पर उन्हें रात एक बजे छोड़ देते हैं। रात 1-2-3 बजे छूटते ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को रास्ते में पुलिस पीटती है – छूटने पर इन्हें गेट पास नहीं देते क्योंकि इससे पता चल जायेगा कि यह कम्पनी में काम करते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 1000 मजदूरों के नाम गेट पर कम्प्युटर शीट में होते हैं पर ठेकेदारों के जरिये रखे 500 वरकरों का फैक्ट्री गेट पर कोई रिकार्ड नहीं होता.... दो दिन लगातार काम पर रोक लेते हैं, आँखें लाल होती हैं, तबीयत खराब, काम करने की हिम्मत नहीं फिर भी फैक्ट्री से नहीं निकलने देते क्योंकि गेट पर सेक्युरिटी को मना किया होता है, गार्ड नहीं जाने देते क्योंकि उनकी अपनी नौकरी का सवाल रहता है।

"एस.पी.एल. कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये 1000 में ज्यादातर कैजुअल वरकर होते हैं, 6 महीने में निकाल दिये जाते हैं, नई भर्ती होती रहती है। मशीनें चलाते कैजुअलों को भी हैल्पर ग्रेड देते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 500 वरकरों (200 लड़कियाँ) को 8 घण्टे के 60 रुपये देते हैं। सब मजदूरों के लिये फैक्ट्री में सप्ताह के सातों दिन काम करना अनिवार्य है। कम्पनी ओवर टाइम पर जबरन रोकती है – ओवर टाइम का भुगतान सब को सिंगल रेट से। कैन्टीन महँगी है – 12 रुपये की थाली जिससे पेट आधा भरता है। स्टाफ व चन्द स्थाई मजदूरों को छोड़ कर 12-16-20 घण्टे काम के दौरान वरकरों को कम्पनी एक कप चाय तक नहीं देती। कम्पनी द्वारा स्वयं रखों को तनखा 10 तारीख तक और ठेकेदारों के जरिये रखों को 15तारीख बाद।"

एम जी एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट 108 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। लगातार 36 घण्टे भी रोक लेते हैं – 12 घण्टे की ड्युटी में एक कप चाय भी नहीं, 36 घण्टे रोकने पर 20 रुपये भोजन के लिये देते हैं। कोई छुट्टी नहीं – प्रत्येक रविवार को ओवर टाइम। हैल्पर की तनखा 1800 रुपये और ऑपरेटरों की 2050-2500 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल दर से। हर महीने 75-100 रुपये वैसे ही खा जाते हैं। फैक्ट्री में हम 250 मजदूर निर्यात के लिये बर्तन बनाते हैं – ई.एस.आई. व पी.एफ. हम में से कुछ के ही हैं। सुपरवाइजर धमकी देते हैं, गाली देते हैं, जूते-चप्पल दिखाते हैं। भर्ती करना और निकालना चलता रहता है। अब मार्च में जाँच अधिकारी आये तब मैनेजमेन्ट ने काफी लड़कों को इधर-उधर छिपाया तथा बाकी को कहा कि 8 घण्टे की ड्युटी और तनखा 2360 रुपये बताना...."

एवन ट्युबटेक वरकर: "प्लॉट 42 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को दिन में फैक्ट्री बन्द रहती है पर रात वाली 12 घण्टे की शिफ्ट रहती है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 50-60 स्टाफ में, 25-30 स्थाई मजदूर, 80 से ज्यादा कैजुअल वरकर जिनकी भर्ती पर शुरू के 6 महीने ई.एस.आई. व पी.एफ. काटते हैं परन्तु फिर बन्द कर देते हैं हालाँकि वह वरकर काम करते रहते हैं। लोडिंग-अनलोडिंग के लिये ठेकेदार के जरिये 20-25 वरकर रखे हैं और घण्टे के हिसाब से पैसे देते हैं – फरवरी में जब इनकी दो महीने की तनखायें बकाया हो गई तब इन्होंने काम रोक दिया था। कम्पनी ने उत्पादन कार्य में भी ठेकेदार के जरिये 75-80 वरकर रखे हैं – हैल्पर की तनखा 2100 रुपये और इन्हीं में से ई. एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं। हर महीने 50-200 रुपये की हेराफेरी करते हैं। लोहे की पाइप का काम है, एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं – बहुत ज्यादा हाथ कटते-छिलते हैं परन्तु दस्ताने सिर्फ वहाँ देते हैं जहां गर्म काम है जबकि दस्तानों की जरूरत फैक्ट्री में हर जगह है। दवा के नाम पर सिर्फ डेटोल है। आपात स्थिति में एक दिन की छुट्टी करने पर 'बिना बताये की' कह कर दो दिन के पैसे काट लेते हैं।"

दिल्ली से -

1.2.06 से दिल्ली में 8 घण्टे ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर महीने में अकुशल मजदूर को 3271 रुपये, अर्ध- कुशल श्रमिक को 3437 रुपये, कुशल मजदूर को 3695 रुपये दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन हैं। लिपिक एवं गैर- तकनीकी सुपरवाइजरी स्टाफ में मैट्रिक से कम के लिये 3464 रुपये, मैट्रिक पास परन्तु स्नातक नहीं के लिये 3719 रुपये, स्नातक एवं अधिक के लिये 4031 रुपये अब दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा हैं। दिल्ली में 1.2.06 से 8 घण्टे ड्युटी के बदले अकुशल मजदूर को 125 रुपये 80 पैसे, अर्ध- कुशल को 132 रुपये 20 पैसे, कुशल मजदूर को 142 रुपये 10 पैसे राज्य सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम दिहाड़ी हैं।

मीडिया कर्मी

मेरा एक दोस्त एक मीडिया ग्रुप में ग्राफिक डिजाइनिंग का काम करता है। अपना और कम्पनी का नाम छपवाने में झिझक है, सो...

" ग्रुप की कम्पनियाँ मुख्यतः टी वी समाचार चैनेल चलाती हैं। काम में दिन- रात दूसरे चैनेलों से तेज़, सबसे तेज़ की मारामारी लगी रहती है। कम्प्युटर डिजाइनरों को पैसा ठीक- ठाक दिया जाता है, कम्पनी में सुविधाओं का खासा ख्याल रखा जाता है। सुस्ती- नींद दूर करने के लिये चाय- कॉफी दिन भर, थकावट चाय- कॉफी से काबू न आये तो सुस्ताने के लिये सोफे, मन बहलाने के लिये टी वी, बढिया रसोई का इन्तज़ाम, शाम को कम्पनी की तरफ से नाश्ता, तंदुरुस्ती बनाये रखने के लिये जिम। मतलब यह कि जितना हो सके, कम्पनी में रहें, और तन- मन कम्पनी की तरक्की में लगा दें।

" कुछ- कुछ समय बाद कान्फ्रेंस, मीटिंग के लिये बाहर ले जाते हैं – शुक्रवार रात को जाना, रविवार रात को वापसी, सोमवार सुबह काम। यानि छुट्टी में घूमना- फिरना भी कम्पनी की तरफ से, कम्पनी के लिये। पिछले दिनों गोवा में एक बड़ी कान्फ्रेंस आयोजित की गई। खूब ताम- झाम, बड़ा खर्च, हवाई जहाज से सफ़र, फाइव स्टार होटल में रहना। एक बारगी तो लगा कि इतना खर्च क्यों, पर पहले ही दिन मतलब समझ में आ गया। एक मैनेजमेन्ट गुरु बुलाये गये थे। वह अपने प्रयासों में जी- जान से लगे थे कि वरकर कम्पनी को अपनी मानें, कम्पनी की उन्नति को अपनी उन्नति मानें, कम्पनी के सपनों को अपने सपने मानें....। दो ही दिन में दिमाग चाट डाला – हम में से ही एक से बुलवा लिया कि अगले दो साल में कम्पनी को कई गुणा बढता देखना चाहते हैं। कम्पनी का सारा खर्चा सफल हुआ – अगले दो दिन में इस सपने को साकार करने के लिये ज़रूरी वर्कलोड तय हो गया। सपने की असलियत रोज़ भुगतते हैं।

"तनाव चौबीसों घण्टे है। तनाव का असर शरीर पर साफ़ दीखता है। दिन भर खेलो, थकावट होती है, तनाव नहीं। दिन भर छुट्टी ले कर आराम करो, पर कम्पनी से दो- चार फोन आ गये तो तनाव शुरू, दिमाग में काम चालू, नींद गायब। बदहज़मी, गर्दन में जकड़न और सिरदर्द सब तनाव में बढ जाते हैं। तनाव होने पर मेरी रीढ की हड्डी के निचले सिरे पर एक फुन्सी भी हो जाती है। उपचार लगातार चलता रहता है।

"कभी- कभी सोचता हूँ कि जिन्दगी में कहाँ जा रहे हैं। पैसे का, वस्तुओं का कोई अन्त है क्या?"

एस्कोर्ट्स

एस्कोर्ट्स मजदूर : " फार्मट्रैक प्लान्ट की पेन्ट शॉप में चोट लगने का खतरा हर समय रहता है। कनवेयर पर आँख में कुण्डी लग जाती है – इन 4 महीनों में दो को लगी। रिम पैर पर गिर जाता है। ट्रैक्टर का मड गार्ड लाइन पर टाँगने में चोट लग जाती है। शीट मैटल ऐसी चीज है कि हाथ कट जाते हैं – दस्ताने नहीं देते और कहते हैं कि खत्म हो गये, ऐसे ही काम करो। इस समय पेन्ट शॉप में काम कर रहे 130 कैजुअल वरकरों में से सिर्फ 2- 4 को ही मास्क देते हैं और बाकी हम सब पेन्ट खा रहे हैं। ए.सी. बूथ बेकार है – पूरा पेन्ट नहीं खींचता। पेन्ट शॉप में 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 125 वरकर भी काम करते हैं – ज्यादा पेन्ट अन्दर जाने के कारण 14 मार्च को ठेकेदार के जरिये रखा एक वरकर उल्टी करके गिर गया। पेन्ट शॉप में साँस की तकलीफें बहुत हैं, चक्कर आते हैं और कम्पनी गुड़ भी नहीं देती – स्थाई मजदूरों को गुड़ की एवज में फिक्स पैसे। और, चोट लगने पर मैनेजर कहता है कि ऐसे लापरवाही से काम करोगे तो अपने घर जाओ। **(बाकी पेज दो पर)**

विचारणीय

होना ही अवैधानिक

दिल्ली का एक दुकानदार एक एफ एम रेडियो स्टेशन पर :
"हमारा तो होना ही अवैधानिक बना दिया है।"

दो- ढाई सौ वर्ष पूर्व आरम्भ हुई दस्तकारी व किसानी की सामाजिक मौत- सामाजिक हत्या बढते पैमाने पर मजदूर उपलब्ध कराने ; दुकानों- दुकानदारों की बाढ लाने ; विशाल आबादियों को फालतू बना कर खदेड़ने अथवा उनका लम्पटीकरण करने का आधार- स्रोत है।

उन्नीसवीं सदी के इंग्लैण्ड को एक शास्त्रीय उदाहरण के तौर पर ले सकते हैं। दस्तकारों- किसानों को मजदूरों में तब्दील कर छोटे- से इंग्लैण्ड का फैक्ट्री- उत्पादन की विश्व- धुरी बनना ; तबाह हुये दस्तकारों- किसानों का इस पैमाने पर दुकानें खोलना कि कुछ विश्लेषकों द्वारा इंग्लैण्ड को दुकानदारों का देश करार देना काफी प्रचलित हुआ ; छोटे- से ग्रेट ब्रिटेन में मण्डी- मुद्रा के प्रसार के संग दस्ताकरी व किसानी की मौत- हत्या ने इस कदर आबादी को फालतू बनाया कि खदेड़े गये- विस्थापित हुये लोगों ने अमरीका- आस्ट्रेलिया में निवासियों को तबाह कर उन क्षेत्रों को " आबाद" किया ; दस्तकारी- किसानी की सामाजिक मौत- सामाजिक हत्या ने बड़ी सँख्या में लोगों का अपराधीकरण- लम्पटीकरण किया – संवेदनशील साहित्यकार द्वारा लन्दन में भीख के संगठित धन्धे का चित्रण....

भाप- कोयले से पैट्रोल- डीजल, बिजली, इलेक्ट्रोनिक्स की राह इंग्लैण्ड के उदाहरण की पुनरावृति विश्व- भर में हुई है, हो रही है पर बहुत- कुछ बदले परिप्रेक्ष्य में। सामाजिक मौत- सामाजिक हत्या के शिकार दस्तकारों- किसानों की सँख्या लाखों- दसियों लाख में नहीं बल्कि करोड़ों- दसियों करोड़ में, अरबों में है। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन संसार- व्यापी हो गया है, उत्पादन व वितरण में कार्यरत मजदूरों की सँख्या में भारी इजाफा हुआ है लेकिन दस्तकारी- किसानी की तबाही इस पैमाने पर लोगों को मण्डी में धकेल रही है कि मनुष्य का भाव टके सेर वाली कहावत को भी बहुत पीछे छोड़ आया है। दुकानों की सँख्या, दुकानों के आकार- प्रकार का संक्षिप्त विवरण- चित्रण तक कई पोथों की माँग करता है – कारखानों के शहर फरीदाबाद में दुकान- दर- दुकान। भारत- चीन- इन्डोनेशिया- मिश्र- नाइजेरिया- अर्जेन्टीना- ब्राजील में दस्तकारी- किसानी से भागते- खदेड़े जाते करोड़ों- अरबों लोगों के लिये कोई अमरीका- आस्ट्रेलिया "खाली" नहीं हैं। इस पैमाने पर विश्व आबादी का अपराधीकरण- लम्पटीकरण हो चुका है, हो रहा है कि इसे दुनियाँ- भर में सरकारें अपने होने को जायज ठहराने के लिये एक प्रमुख दलील के तौर पर इस्तेमाल कर रही हैं और दमन- तन्त्र में नित नई वृद्धि कर रही हैं.....

दरअसल, हम उन राहों पर हैं जहाँ हमारी अपनी मेहनत, हमारा संचित श्रम, हमारे ही खिलाफ होता है। यह राहें हमें स्वामी और दास, सामन्त और भूदास, व्यापारी और निजी व पारिवारिक श्रम द्वारा मण्डी के लिये उत्पादन के पड़ावों से हो कर वर्तमान की मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली व्यवस्था में ले आई हैं। और, हमारी मेहनत हमारे ही खिलाफ का सिलसिला जारी है....

कभी "दुकानदारों का देश" के नाम से जाना जाता इंग्लैण्ड आज विशाल डिपार्टमेन्टल स्टोरों वाला है – दुकानें व दुकानदार गायब- से हो गये हैं। दिल्ली लन्दन की राह पर है और भारत सरकार का सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में दुकानदारों पर आक्रमण में सेनापति की भूमिका में है.... इन दुकानदारों के होने को ही गैर- कानूनी करार दे कर दुकानदारों की सामाजिक मौत को गति प्रदान करने के लिये न्यायालय ने सामाजिक हत्या का वैधानिक आधार प्रदान किया है।

झुग्गी बस्तियों पर आक्रमण में भी न्यायालय सेनापति की भूमिका में हैं।

आवश्यकता नई राहों, नई समाज रचना पर मन्थन की है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।